चौथा राष्ट्रीय नाट्य समारोह '97

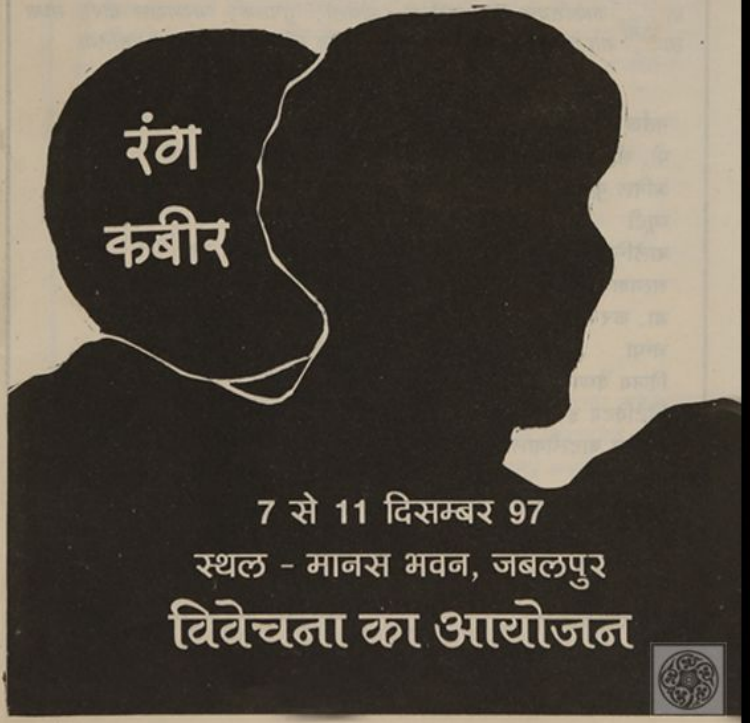

7 से 11 दिसम्बर 97

स्थल - मानस भवन, जबलपुर

विवेचना का आयोजन

संगीत संयोजन	-	रियाज अहमद
संगीत संचालन	-	रियाज अहमद, शुभ्रज्योति
प्रकाश व्यवस्था	-	अनिल परमार, हनीफ पाटनी
वेषभूषा	-	मिष्टी वर्मा, राशि प्रभाकरन
प्रापर्टी	-	अकबर खान, शशिकांत
रूपसज्जा	-	अनिल मेकअप सर्विस
प्रचार	-	प्रकाश सोनी, रियाज अहमद
बेक स्टेज	-	रवि राय, शशिकांत, अशोग पगारे, अमन
बाक्स आफिस एवं वित्त प्रबंधन	-	हनीफ पाटनी

"सपना"

मूल नाटक	-	मिड समर नाइट ड्रीम
अनुवाद	-	हबीब तनतीर
परिकल्पना एवं निर्देशन	-	हबीब तनतीर
प्रस्तुति	-	नया थियेटर, भोपाल

नाटक के बारे में

विलियम शेक्सपियर कृत मिड समर नाइट ड्रीम का हिन्दी रूपांतरण 'कामदेव का सपना और बसंत ऋतु का सपना' का 'सपना' नामक नाट्य प्रस्तुति का रूपांतरण और निर्देशन प्रख्यात रंगकर्मी 'हबीब तनवीर' की सबसे नई और चुस्त प्रस्तुति है।

शेक्सपियर कृत इस हास्य रचना में त्रिकोणीय प्रेम और उन पर आधारित तीनों प्रेमी-युगलों के अन्ततः विवाह की स्थिति को प्राप्त परिणति के अंतर्गत नाट्ककार द्वारा परी-बनाम-विदूषक-सा भांड़, राजदरबारियों की नीरस राजनैतिक गतिविधियों-बनाम-अनुलोभी प्रेम-प्रसंग, आपसी झगड़े बनाम-प्रत्युत्पन्न झगड़े-सरीदवा हल और राजमहल और वन-उपवन में घटित होने वाली नियति की नाटकीय विडम्बनाओं के जरिये कथानक को जिस खूबसूरती और हास्यप्रद चुस्ती से बांधा गया है उसी खूबसूरती और चुस्ती से यूनानी प्रेमियों की त्रासद प्रतीक स्वरूप पिरैमस और थिसबी की भाग्यवादी विडम्बनाओं पर आधारित इस 'सपना' नाटक को निर्देशक ने भी उसी कुशलता से बांधा है।

"फाईनल सौल्यूशन्स"

लेखक	-	महेश दत्तानी
अनुवाद	-	शाहिद अनवर
निर्देशक	-	अरविन्द गौड़
प्रस्तुति	-	अस्मिता, नई दिल्ली

नाटक के बारे में

"फायनल सौल्यूशन्स" देश की समसायिक और गम्भीर समस्या 'सांप्रदायिकता' विषय पर आधारित नाटक है। नाटक हिन्दू-मुस्लिम व अन्य सांप्रदायिक तत्वों, उनके घृणित प्रयासों को बेनकाब करता है जो एक समाज को दूसरे समाज से लड़वाते रहते हैं। इसी विषय पर लिखे गये अन्य नाटकों से 'फायनल सौल्यूशन्स' इस मायने में अलग है कि अपील के स्तर पर नाटक न तो भावनात्मक है और 'एप्रोच' के स्तर पर। यह नाटक धर्म के प्रति विभिन्न मतों के साथ-साथ समाज विज्ञानियों के लिए धार्मिक पहचान का एक रास्ता बताता है और उनकी पहचान करातां है जो समाज और देश को सांप्रदायिकता की धधकती आग में झोंक देते हैं। नाटक इस ओर भी इशारा करता है कि

सांप्रदायिक तत्वों में नैतिकता आ नहीं सकती क्योंकि सांप्रदायिकता सड़कों पर नहीं ऐसे तत्वों के दिलो दिमाग में रची-बसी है। नाटक में बंटवारे के बाद से अभी तक के सांप्रदायिक रंगों की कथा वस्तु में समेय गया है। इस सांप्रदायिक समस्या का एकमात्र संभावित हल नजर आता है सांप्रदायिकता से बचने का जो इस समय देश की ही नहीं वरन् पूरे विश्व की समस्या है।

अस्मिता

समसामयिक विषयों पर नाटकों की सशक्त और प्रभावशाली नाटकों के प्रति प्रतिबद्ध नाट्य संस्था 'अस्मिता' सक्रिय और अनुभवी रंगकर्मियों की संस्था है। दिल्ली के विभिन्न महाविद्यालयों में नाट्य कार्यशालएं आयोजित करने के साथ-साथ 'हानूश', 'तुगलक', 'अंधायुग', 'रक्तकल्याण', 'जूलियस सीजर', 'दिलफरोश, 'कोर्ट मार्शल' डेरियो फो का नाटक 'थ्री स्टार' आदि प्रमुख नाटकों का मंचन। ये सभी नाटक प्रशंसित और चर्चित तो हुए ही। इन् सबके अनेक प्रदर्शन देश के विभिन्न भागों में हुए। कलकत्ता राष्ट्रीय नाट्य समारोह में हिन्दी नाटकों में से 'कोर्ट मार्शल' को ही आमंत्रित किया गया था।

मंच पर

कोरस	-	अमिल कोहली, संजीव जुगस, वसीम खान परवेज खान बाली, प्रमोदी, हाशिम हैदर, तरुण चौहान, आशीष शर्मा, मृगयंक दुबे, मनीषा मान, अनूप चौधरी, अमरनाथ, शरीफ अंसारी, विष्णु प्रसाद, शक्ति आनंद, राजीव माधुर, नवीन त्यागी, सुधीर दरयान।
दक्ष	-	नंदिनी अरोरा
हरीदिका	-	सोनू मिश्र
स्मिता	-	पूनम गिरधानी
रमणीक	-	मानू ऋषि चड्ढा
अरूणा	-	सीमा
बब्वन	-	राजेश कुमार
जावेद	-	दीपक डोरियाल

नेपथ्य

वेशभूषा	-	पूनम गिरधानी, पंकज गुप्ता
वेषभूषा सहयोग	-	गंगाराम, आशीष शर्मा, कपिल गुलाटी
मंच	-	परवेज खान, वाली, मनु ऋषि चड्ढा, विष्णु प्रसाद, सुधीर दयान, अमित कोहली, आशीष शर्मा
रूप सज्जा	-	दीपक सेठी, नलिन श्रीवास्तव
एफ. ओ. एच.	-	ऋषभ देव, डॉली, डिफौरी, मंदाकिनी माला, अर्पणा सिंह वसुदा
स्टिल्स्	-	पिल्लई
पोस्टर चित्र	-	आऊट लुक के सहयोग से
ब्रोशर	-	म्रगयंक दुबे
प्रचार प्रभारी	-	वसीम खान, हासिम हैदर
प्रस्तुति नियंत्रक	-	राजेश कुमार
सामग्री	-	सीमा प्रमोद, हाशिम हैदर
प्रकाश	-	त्रिभुवन
संगीत	-	संगीत गौड़

अनुवाद	-	शाहिद अनवर
पटकथा	-	महेश दत्तानी
निर्देशक	-	अरविन्द गौड़

"फायनल सौल्यूशन्स"
उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद
के सहयोग से मंचित होने जा रहा है।

"द जनपथ किस"

परिकल्पना एवं निर्देशन	-	रंजीत कपूर
प्रस्तुति	-	श्रीराम सेन्टर रेपेटरी, नई दिल्ली

नाटक के बारे में

'द जनपथ किस' नाटक की पूरी कथा एक छोटी सी घटना को लेकर बुनी गई है जो हमारी समाज, व्यवस्था, सामाजिक, राजनैतिक स्थिति के खोखलेपन को उजागर करती है। नाटक की कहानी एक फोटोग्राफर, इंजीनियर और एक चालू नेता के इर्द-गिर्द घूमती है। फोटोग्राफर राजधानी के व्यापारिक क्षेत्र में 'जनपथ' पर एक नई कहानी की तलाश में है। सदानंद एक ग्रामीण युवा है जो कार्यपालन यंत्री है और तीन लाख का दहेज लेकर उसने शादी भी रचा ली है। उसका एक पुत्र भी है। इसी दौरान सदानंद की मुलाकात तिवारी नाम के एक नेता से होती है। दोनों मिलीभगत से लूट-खसोट में लग जाते हैं। और तिवारी सांसद बनने में कामयाब हो जाता है। सदानंद इस लूट-खसोट से ऊब जाता है तभी जनपथ पर एक लड़की का किस लेने के चक्कर में जेल चला जाता है। तिवारी और उसके साथी उसे छुड़ाने का प्रयास करते हैं परन्तु वह अपना अपराध स्वीकार कर लेता है। बाद में वह उस लड़की से शादी कर लेता है। इस नाटक के बहाने समसामयिक स्थितियों की परतें उधेड़ी गई हैं। निर्देशक रंजीत कपूर ने कल्पना और सूझ-बूझ का भरपूर इस्तेमाल नाटक में किया है।

रंजीत कपूर

रंजीत कपूर को रंगकर्म विरासत में मिला। पारसी थियेटर के एक परिवार में जन्मे रंजीत कपूर ने अपने पिता (अब स्वर्गीय) मदनलाल कपूर के साथ 24 साल तक देश के विभिन्न भागों का दौरा किया।

फिर दो साल तक (1977-1979) तक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की रेपेटरी में काम 'बेगम का तकिया' और 'मुख्यमंत्री' जैसे प्रख्यात नाटकों का निर्देशन। कुछ प्रमुख नाटकों का लेखन और रूपांतर अनुवाद जिनमें 'वाइजक' वेरी द डेड कोलेग, 'द जनपथ किस", 'चेखोव की दुनिया', 'कोर्ट मार्शल' आदि।

इसके अलावा 'मोहन जोशी हाजिर हो', 'एक रुका हुआ फैसला', 'जाने दो यारो' आदि फिल्मों की पटकथा लिखी। साहित्य नाट्क अकादमी द्वारा सर्वश्रेष्ठ नाट्य निर्देशक के पुरुस्कार से सम्मानित।

"कामेडी ऑफ टैरर्स"

मूल नाटक	-	डेरियो फो
अनुवाद	-	रंजीत कपूर
परिकल्पना एवं निर्देशन	-	पीयूष मिश्रा
प्रस्तुति	-	श्रीराम सेन्टर रेपेटरी, नई दिल्ली

नाटक के बारे में

इटली के प्रख्यात अभिनेता, नाटककार, डेरियो फो अपनी प्रस्तुतियों और समर्पण के लिए विश्व विख्यात रहे। उनके तीखे और धारदार व्यंग्य नाटकों ने इटली के बाहर भी धूम मचाई। इटली के रंगमंच और उसकी संस्कृति में डेरियो फो की केन्द्रीय भूमिका रही।